दबे पैरों से उजाला आ रहा है

यश मालवीय का गीत

प्रस्तुतकर्ता- डॉ आरिफ महात

यश मालवीय/दबे पैरों से उजाला आ रहा है

दबे पैरों से उजाला आ रहा है
फर कथाओं को खँगाला जा रहा है

धुंध से चेहरा निकलता दिख रहा है
कौन क्षितिजों पर सवेरा लख रहा है
चुप्पियाँ हैं जुबाँ बनकर फूटने को
दिलों में गुस्सा उबाला जा रहा है

यश मालवीय/दबे पैरों से उजाला आ रहा है

दूर तक औ' देर तक सोचें भला क्या
देखना है बस फजाँ में है घुला क्या
हवा में उछले सरों के बीच ही अब
सच शगूफे सा उछाला जा रहा है

नाचते हैं भय सयारों से रँगे हैं
जिधर देखो उस तरफ कुहरे टँगे हैं
जो नशे में धुत्त हैं उनकी कहें क्या
होश वालों को सँभाला जा रहा है

यश मालवीय/दबे पैरों से उजाला आ रहा है

स्थ गत है गति समय का रथ रुका है
कह रहा मन बहुत नाटक हो चुका है
प्रश्न का उत्तर कठिन है इस लिए भी
प्रश्न सौ-सौ बार टाला जा रहा है

सेंध गहरी नींद में भी लग गई है
खीझती सी रात काली जग गई है
दृष्टि में है रोशनी की एक चलनी
और गाढ़ा धुआँ चाला जा रहा है